2 जून 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन
सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 5 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (प्रथम), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

विदिशा में 50वाँ स्वर्ण जयंती आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर
ज्ञानानन्द महोत्सव सानन्द संपन्न

● देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 3000 से अधिक एवं सैंकड़ों स्थानीय आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में लाभान्वित ●प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित ● शिविर में लगभग 75 विद्वानों द्वारा धर्मप्रभावना ● 250 से अधिक स्नातकों की उपस्थिति।

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ स्वर्णकार कॉलोनी स्थित विनायक बैन्क्वेट हॉल में रविवार, दिनांक 15 मई से बुधवार, दिनांक 1 जून तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट व अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, विदिशा द्वारा आयोजित 18 दिवसीय 50वाँ स्वर्ण जयंती वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अत्यंत भव्यता एवं हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

उद्घाटन समारोह – दिनांक 15 मई को शिविर का भव्य उद्घाटन समारोह आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री आई.एस. जैन मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि श्री श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' (पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री, ग्रामीण व विकास भारत सरकार) थे। शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री चक्रेशकुमार राजेशकुमार सौरभ वैभव जैन अशोकनगर, शिविर उद्घाटनकर्त्ता पण्डित शिखरचंदजी अलंकार ज्वैलर्स विदिशा थे। ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर ने किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती परिणति जैन विदिशा ने किया।

इस अवसर पर श्री चौबीस तीर्थंकर महामंडल विधान का आयोजन किया गया, जिसके आमंत्रणकर्त्ता श्री प्रकाशचंदजी वेद गुना, विधान के उद्घाटनकर्त्ता श्री देवेन्द्रजी बड़कुल भोपाल थे। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में अनेक विद्वानों के सहयोग से संपन्न हुये।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में प्रशिक्षण शिविर का स्वरूप व उसकी उपयोगिता के बारे में बताया।

प्रात:कालीन प्रवचन – प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के अतिरिक्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा 'प्रवचनसार ग्रन्थ के ज्ञान-ज्ञेय विभागाधिकार' विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रिकालीन प्रवचन – ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा ज्ञानानन्द स्वभाव विषय पर प्रतिदिन हुये प्रवचनों के पूर्व पण्डित धर्मेन्दजी शास्त्री कोटा, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, ब्र.श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, ब्र.कैलाशचंदजी अचल ललितपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली आदि विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रवचनों के उपरान्त अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

दोपहर की व्याख्यानमाला में – पण्डित सुधीरजी मंगलायतन, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, पण्डित उदयजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, पण्डित संजयजी शास्त्री औरंगाबाद, पण्डित राजेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित मनीषजी कहान जयपुर, पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ आदि विद्वानों के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें – बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

शाबास प्रतीक

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में अध्ययनरत प्रतीक जैन पुत्र श्री अजयकुमारजी जैन विदिशा (म.प्र.) ने वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) परीक्षा की मेरिट लिस्ट में 5वाँ स्थान (जिले की मेरिट में द्वितीय स्थान) प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। प्रतीक की इस सफलता पर टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

फागुन का महीना था, न अधिक गर्मी न अधिक सर्दी, यात्रा के लिये सबसे अच्छा समय देखकर डॉक्टर दम्पत्ति ने विचार किया –''यदि राजू को जुलाई सत्र में उसी छात्रावास और विद्यालय में प्रवेश दिलाना है तो अभी से प्रयत्न करना होगा, एतदर्थ क्यों न कल–परसों से ही पन्द्रह दिन का तीर्थयात्रा का कार्यक्रम बना लिया जाये। शुभकाम में देर क्यों ?

वैसे तो वहाँ जाकर देखने जैसी कोई बात नहीं थी, पत्राचार से सम्पर्क द्वारा भी काम बन सकता था; पर बेबी, बबली आदि ने व्यर्थ का बवाल मचाकर वहाँ के विरुद्ध वातावरण बनाकर संशय में जो डाल दिया था; अत: जब तक अपनी आँखों से वहाँ की स्थिति न देख लें, तब तक स्वयं को भी संतोष नहीं होगा और दूसरों से भी दृढता से नहीं कह सकेंगे।''

डॉ. धर्मचन्द एवं उसकी पत्नी का यह सोचना उचित भी था, क्योंकि दूध का जला छाछ को भी फूँक–फूँककर पीता है। उन्हें भय था कि राजू दोबारा कहीं गलत संगति में न पड़ जाये। अत: उन्होंने एक बार स्वयं उस संस्था के वातावरण को देखने का निश्चय किया था।

तीर्थयात्रा का कार्यक्रम तो बन गया था, पर वे अभी तक यह निर्णय नहीं कर पा रहे थे कि असलियत का पता कहाँ से/कैसे चल सकता है ? सोचते–सोचते वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि पहले यात्री के रूप में वहाँ दो–तीन दिन ठहरकर वहाँ की एक–एक गतिविधियों पर दृष्टि डालना चाहिये एवं वहाँ के आवासी छात्रों से सीधा सम्पर्क करके उनकी मन:स्थिति एवं वहाँ की परिस्थितियों का अध्ययन करना चाहिये।

ऐसा विचार करके वे यात्रा की तैयारी में लग गये।

दूसरे दिन ही सवेरा होते–होते डॉ. धर्मचन्द, उनकी पत्नी एवं राजू उस जैन नगरी में जा पहुँचे, जहाँ वह विद्यालय स्थापित था।

ज्यों ही वे प्रवेश द्वार पर पहुँचे तो प्रथम तो वे भवन की भव्यता से ही बहुत प्रभावित हुये। सवेरे के पांच बज रहे थे, आते ही मंगलाचरण के रूप में जिनालय में से सामूहिक प्रार्थना की गूँजती मधुर ध्वनि ने उनका स्वागत किया। तत्पश्चात उनके कानों में पूरे प्रांगण में गूँज रही वैराग्यरस से ओतप्रोत बारह भावना की संगीतमय ध्वनि ने उनके हृदयपटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। तत्काल बाद टेप प्रवचन के माध्यम से 'अहा हा भगवान आत्मा' के स्वर सुनाई देने लगे। साढे छ:–सात बजते–बजते जिनालय में भक्तों की भीड़; फिर क्रमश: कक्षायें, प्रवचन, छात्रों की सामूहिक पूजन होते–होते साढे नौ बज गये।

बारहमासी प्रात: पांच से साढे नौ बजे तक एक के बाद एक और एक से बढकर एक दैनिक कार्यक्रम देखकर वे चकित रह गये। कहाँ मिलता है ऐसे मंगलमय वातावरण सहज संयोग ?

सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक पूरे चौबीस घंटे की कितनी व्यवस्थित और संतुलित है यह दिनचर्या ? जिसमें न एक मिनट फालतू है और न विद्यार्थियों पर अनावश्यक बोझ। लौकिक और लोकोत्तर दोनों प्रकार के जीवन के विकास के लिये संतुलित साधन, व्यवस्थित समय का निर्धारण और सभी प्रकार से शुद्ध सात्विक वातावरण।

खेलकूद से लेकर खानपान तक और आध्यात्मिक अध्ययन से लेकर लौकिक पत्र–पत्रिकाओं की समुचित व्यवस्था। सभी छात्र स्वतन्त्र रहते हुये भी पूर्ण अनुशासित, आतिथ्य सत्कार में अग्रणी, पूर्ण प्रसन्न, हंसमुख, शांत, सरल और परस्पर में बंधुत्वभाव से रहते हुये एक–दूसरे के सुख–दु:ख में समभागी और समर्पित। न कोई शिकायत न शिकवा और न कोई असंतोष की भाषा। जैसा जो उपलब्ध उसी में संतुष्ट।

यह सब देखकर डॉक्टर दम्पत्ति तो संतुष्ट हुये ही, राजू भी वहाँ रहने के लिये मानसिक रूप से तैयार हो गया था। पर डॉक्टर धर्मचन्द ने सोचा –''यह बाहरी वातावरण तो किसी विशिष्ट व्यक्तित्व के दबाव से या उसके सहज प्रभाव से बनावटी भी हो सकता है, नकली भी हो सकता है। इसकी अंतरंग स्थिति का परिचय तो वहाँ के कार्यकर्ताओं और छात्रों से बात करने से ही स्पष्ट हो सकेगा।''

छात्रों की मनस्थिति जानने के लिये डॉक्टर ने एक–एक करके अनेक छात्रों से सम्पर्क किया। सबकी लगभग यही रिपोर्ट थी कि ''घर और बाहर की सुख–सुविधाओं में तथा व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवस्थाओं में जो अन्तर होता है, उसे ध्यान में रखकर देखें तो आज ऐसी सुविधायें और प्रगति के अवसर अन्यत्र दुर्लभ हैं।''

छात्रों ने बताया ''जो छात्र गाँव और कस्बों से आते हैं या

मध्यम घरों से आते हैं, उनके लिये तो यह स्वर्ग-सा लगता ही है, साथ ही जो घर का बहुत ही आरामदायक जीवन छोड़कर आते हैं, वे भी यहाँ के आध्यात्मिक वातावरण में थोड़ा कठोर जीवन जीना सीख लेते हैं। उन्हें भी फिर घर का वह भोग प्रधान आरामदायक जीवन अच्छा नहीं लगता।''

छात्रों के साथ हुई बातचीत के दौरान डॉ. धर्मचन्द ने एक छात्र से पूछा -''आप लोगों को यहाँ अपने माता-पिता और कुटुम्ब परिवार तथा मित्रों की याद तो सताती ही होगी ?''

एक छात्र का उत्तर था -''यहाँ हमारे माता-पिता और परिवार के लोग तो नहीं हैं, पर हमें माता-पिता और परिवार जैसा स्नेहपूर्ण वातावरण यहाँ मिल जाता है और मित्रों की क्या कहें ? पांच-दस मित्रों को छोड़कर आते हैं और सत्तर-बहत्तर नये मित्र मिल जाते हैं। अत: हमें यहाँ ऐसा लगता ही नहीं कि हम घर से दूर कहीं बाहर रह रहे हैं। फिर समय-समय पर घर जाने की छुट्टियाँ भी मिल ही जाती है। यहाँ भी हमारे घर वाले और रिश्तेदार आते रहते हैं।''

डॉक्टर ने अगला प्रश्न किया -''यहाँ भोजन में जमीकंद नहीं बनता, बेसन व छाछ के मिश्रण से बनने वाले कढी आदि स्वादिष्ट वस्तुयें कुछ भी नहीं बनती, आपके घर जैसा भोजन भी नहीं बन पाता, इससे आप लोगों को असुविधा नहीं होती ?''

दूसरे छात्र ने आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया -''यह बात सच है कि भोजन सबके मन का नहीं बनता, बन भी नहीं सकता; क्योंकि यहाँ विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न भाषा-भाषी छात्र रहते हैं और सबके खानपान और रहन-सहन की संस्कृतियाँ और रुचियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। किसी को मीठा पसन्द है तो किसी को तीखा। यदि हमारे घरों में भी ऐसा करना पड़े तो हम वहाँ एक-दो दिन को भी नहीं निभा पाते तो यहाँ बारहों मास ऐसा कैसे सम्भव हो सकता है ? पर जो बनता है वह अच्छे स्तर का बनता है।

दूसरे, हम लोग पढने के लिये आते हैं, पढना ही हमारा मुख्य लक्ष्य है, अत: हम लोग भोजन सम्बन्धी छोटी-मोटी कमियों पर ध्यान नहीं देते, देना भी नहीं चाहिये। सामूहिक व्यवस्था में जो संभव होगा, वही तो किया जायेगा। घर जैसी सुविधायें तो घर पर ही सम्भव हैं न ?

आप अपने को ही देखिये न ! आप यात्रा पर निकले, तो क्या आपको हर जगह घर जैसी सुविधायें मिल रही हैं ?

रही बात जमीकन्द और द्विदल आदि सब्जियों के न बनने की, सो जैन होने के नाते जिनमें त्रस और बहुस्थावर जीवों की हिंसा हो - ऐसा हिंसाजनित भोजन तो अभक्ष्य होने से खाने लायक ही नहीं है।

जिसमें असंख्य सूक्ष्म त्रस-स्थावर जीवों की हिंसा होती हो, वह अभक्ष्य भोजन यह अहिंसक समाज कैसे खा सकता है ?''

डॉक्टर ने कहा - ''यह अहिंसक जैन समाज क्या कर सकता है और क्या नहीं - यह तो जाने दो। तुम तो अपनी कहो, यहाँ बनता नहीं है, इसलिये तुम नहीं खाते हो या कि तुमने अपने दिल से ही इनके खाने का त्याग कर दिया है ?''

दूसरे छात्र ने उत्तर दिया -''प्रारम्भ में प्रवेश के समय तो यहाँ बनते नहीं थे, इस कारण हम खाते भी क्या ? और अब हमें प्रवचनों और कक्षाओं के माध्यम से भलीभांति इनकी हेयता का ज्ञान हो गया है, ये अभक्ष्य हैं, खाने योग्य नहीं हैं, यह अच्छी तरह समझ में आ गया; अत: अब हम सब लोगों ने अपने मन से ही उन सबका आजीवन त्याग कर दिया है।

इतना ही नहीं, जब हम अपने-अपने घर जाते हैं तो घरवालों को भी यही समझाते हैं। इससे धीरे-धीरे अब हमारे घरों में भी आलू आदि जमीकंद और दही व दालों के मिश्रण से बनने वाली द्विदल सब्जियाँ नहीं बनती।''

अब तक राजू की झिझक टूट चुकी थी। अत: उसने पूछ लिया -''क्या आप लोग बतायेंगे कि ये अभक्ष्य क्यों होते हैं ?

एक छात्र ने कहा -''हाँ, हाँ जरूर बतायेंगे, क्यों नहीं बतायेंगे ? आप पूछें और हम न बतायें - ऐसा कैसे हो सकता है ? जो खाने योग्य हो वह भक्ष्य और जो खाने योग्य न हो वह अभक्ष्य। इतना तो आप समझते ही हैं न ?''

डॉक्टर ने बीच में ही अपने डॉक्टरी मंतव्य को प्रगट करते हुये प्रश्न किया -''अरे भाई ! ये जमीकंद तो खाने योग्य होते हैं, इनमें तो बहुत सारे विटामिन्स और प्रोटीन अर्थात् शरीर पोषक तत्त्व होते हैं तथा शरीर के लिये घातक नहीं, बल्कि लाभदायक होते हैं, फिर ये अभक्ष्य कैसे हुये ?''

एक मुँह फट छात्र बोला -''डॉक्टर साहब ? क्षमा करना, अभी आपने अकेले साग-भाजियों के तत्त्व ही पढे हैं। अब आपको इनके सिवाय जैनदर्शन के तत्त्वों को भी पढना होगा; क्योंकि इन तत्त्वों के खाते-पीते भी तो यह शरीर पुष्ट नहीं रह पाता। देखिये न ! आप तो सभी तत्त्व (विटामिन्स) बराबर खा-

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययनहेतु प्रश्नोत्तर

नोट :- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इसकी विस्तृत रूपरेखा जैनपथप्रदर्शक के 2 अप्रैल 2016 के अंक में प्रकाशित की गई है। इस क्रम में तृतीय अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं। जो भी भाई-बहिन इस योजना से जुड़ना चाहते हैं, वे 09785643202 पर संपर्क करें।

प्रश्न : कर्मों के भेद एवं उनके कार्यों का सामान्य वर्णन कीजिये ?

उत्तर : कर्म घाति और अघाति के भेद से 2 प्रकार के हैं। घातिया कर्म जीव के स्वभाव के घात में निमित्त होते हैं। ये ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अंतराय के भेद से 4 प्रकार के हैं। अघातिया कर्म के निमित्त से आत्मा को बाह्य सामग्री का संबंध बनता है। वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र - ये 4 अघातिया कर्मों के भेद हैं।

प्रश्न : घातिकर्म के निमित्त से क्या होता है ?

उत्तर : ज्ञानावरण और दर्शनावरण से तो जीव के ज्ञान-दर्शन की व्यक्तता नहीं होती। उन कर्मों के क्षयोपशम के अनुसार किंचित् ज्ञान-दर्शन की व्यक्तता होती है। मोहनीय से जो जीव के स्वभाव नहीं है, ऐसे मिथ्या श्रद्धान व क्रोध-मान-माया-लोभादि कषाय की व्यक्तता रहती है। अन्तराय से जीव के स्वभाव, दीक्षा लेने की सामर्थ्यरूप वीर्य की व्यक्तता नहीं होती। उसके क्षयोपशम के अनुसार किंचित् शक्ति होती है।

प्रश्न : अघाति कर्म के निमित्त से क्या होता है ?

उत्तर : अघाति कर्म के निमित्त से इस आत्मा को बाह्य सामग्री का संबंध बनता है। वहाँ वेदनीय से तो शरीर में अथवा शरीर से बाह्य नाना प्रकार सुख दुख के कारण परद्रव्यों का संयोग जुड़ता है। आयु से अपनी अपनी स्थित पर्यन्त प्राप्त शरीर का संबंध नहीं छूट सकता। नाम से गति, जाति शरीरादिक उत्पन्न होते हैं और गोत्र से उच्च-नीच कुल की प्राप्ति होती है।

प्रश्न : जब कर्म परद्रव्य हैं, जड़ हैं तो फिर उनसे जीव के स्वभाव का घात होना या उनसे बाह्य सामग्री का मिलना कैसे संभव है ?

उत्तर : कर्म स्वयं कर्ता होकर प्रयत्नपूर्वक जीव के स्वभाव का घात नहीं करते या स्वयं बाह्य संयोग सामग्री को एकत्र नहीं करते हैं। कर्म के उदयकाल में आत्मा स्वयं उस रूप परिणमित होता है तथा परद्रव्य भी वैसे ही संबंधरूप होकर परिणमित होते हैं। अत: कर्म और आत्मा का परस्पर ऐसा निमित्त-नैमित्तिक संबंध है, जिसप्रकार सूर्योदय होने पर कमल खिलता है।

प्रश्न : नवीन कर्म का बंध कैसे होता है ?

उत्तर : सर्वप्रथम अघातिया कर्मों के उदय से बाह्य सामग्री मिलती है, जो परद्रव्य है और परद्रव्य बंध का कारण नहीं होते। इसलिये अघाति कर्म का उदय नवीन बंध का कारण नहीं है। घातिकर्म में ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय कर्म के उदय के निमित्त से जीव के स्वभाव का घात होता है, जिससे स्वभाव का कुछ अंश व्यक्त होता है और कुछ अव्यक्त। जो स्वभाव व्यक्त नहीं है, वह उस काल में अभाव रूप है और अभावरूप वस्तु नवीनकर्म बंध में निमित्त नहीं होती। जो व्यक्त है वह स्वभाव का अंश है और स्वभाव बंध का कारण नहीं होता; इसलिये ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय कर्म का उदय भी नवीन बंध का कारण नहीं है।

मोहनीय कर्म के उदय में जीव को अयथार्थ श्रद्धानरूप मिथ्यात्वभाव और क्रोधादिक कषाय होती है। यद्यपि ये जीव के परिणाम हैं; पर कर्मोदय के निमित्त होने से औपाधिक भाव हैं, स्वभाव नहीं; इसलिये मोह के उदय से उत्पन्न मिथ्यात्व और कषायरूप परिणाम ही नवीन बंध का कारण है।

प्रश्न : बंध कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर : बंध चार प्रकार का होता है -

(1) प्रकृति बंध - कर्मों का ज्ञानावरण-दर्शनावरणरूप परिणमन का निर्धारण।

(2) प्रदेश बंध - कर्म वर्गणाओं की संख्या का निर्धारण।

(3) स्थिति बंध - कर्म का आत्मा के साथ एकक्षेत्र अवगाह रूप रहने की काल मर्यादा का निर्धारण।

(4) अनुभाग बंध - उदय में आने पर कर्म की फलदानरूप शक्ति।

प्रश्न : योग किसे कहते हैं ?

उत्तर : नामकर्म के उदय से प्राप्त मन-वचन-काय की चेष्टा के निमित्त से आत्मप्रदेशों में जो चंचलपना होता है, उससे आत्मा में पुद्गल कार्माण वर्गणा के साथ एकबंधान होने की शक्ति प्राप्त होती है, इसे योग कहते हैं।

यह योग शुभ और अशुभ के भेद से 2 प्रकार का होता है। धर्म के अंगों में प्रवृत्ति शुभयोग और अधर्म के अंगों में प्रवृत्ति अशुभ योग कहलाता है।

प्रश्न : प्रकृति और प्रदेश बंध किस निमित्त से होते हैं ?

उत्तर : प्रकृति और प्रदेशबंध में योग निमित्त होता है। अल्प योग होने पर अल्प कार्मणवर्गणा और बहुत योग होने पर बहुत कार्मणवर्गणा का ग्रहण होता है; यह प्रदेश बंध है। एक समय में ग्रहण किये गये पुद्गल परमाणुओं का ज्ञानावरणादि मूल और उसकी उत्तर प्रकृतियों में विभक्त हो जाना प्रकृति बंध है।

प्रश्न : प्रकृति व प्रदेश बंध में शुभ/अशुभ योग से कोई भेद पड़ता है या नहीं ?

उत्तर : शुभ योग हो या अशुभ योग, सम्यक्त्व के बिना घातिकर्मों की सब प्रकृतियों में निरंतर बंध होता रहता है तथा अघातिया कर्मों की प्रकृतियों में शुभ योग होने पर साता वेदनीय आदि पुण्य प्रकृतियों का, अशुभ योग होने पर असाता वेदनीय आदि पाप प्रकृतियों का और मिश्रयोग होने पर कितनी ही पुण्य व कितनी ही पाप प्रकृतियों का बंध होता रहता है।

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष के अवसर पर
शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर में प्रथमबार डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा रचित

श्री समयसार महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, 9 अक्टूबर से शुक्रवार, 14 अक्टूबर 2016 तक)

आवास आरक्षण पत्र

कृपया सही का निशान लगाईये यदि आप हैं तो :

इन्द्र ☐ श्रेणी – I ☐ II ☐ III ☐ IV ☐ V ☐ स्नातक ☐ डॉक्टर ☐ स्वयंसेवक ☐

विवरण (कृपया फार्म को स्पष्ट/सही भरें)

क्र.	यात्री का नाम	मोबाइल	पु./स्त्री	उम्र	भोजन(हि./गुज./शो.)
1.					
2.					
3.					
4.					

12 वर्ष से छोटे बच्चों का विवरण यहाँ देवें – 1. नाम....., आयु .....

2. नाम....., आयु .....; 3. नाम....., आयु .....

विशेष नोट : यदि आपके साथ 4 से अधिक लोग हैं, तो शेष व्यक्तियों की जानकारी अलग कागज पर लिखकर फार्म के साथ संलग्नकर भेजें।

आवास किसके नाम बुक किया जाये (ग्रुप लीडर का नाम) : _____

पूरा पता : _____

_____ पिनकोड ..... मोबाइल : .....

फोन ..... ई-मेल : .....

शिखरजी पहुँचने की तारीख ..... समय ..... शिखरजी से वापसी की तारीख : .....

साधन एवं उसका विवरण : हवाई जहाज ☐ ट्रेन ☐ बस ☐ अपना साधन ☐

हस्ताक्षर ग्रुपलीडर

नोट : कृपया फार्म को बार-बार या डबल भरकर न भेजें। आवास की डिटेल के लिये पीछे देखें।

1. आवास के आरक्षण हेतु अपनी निर्धारित राशि का चैक/डी.डी./बैंक स्लिप फार्म के साथ अवश्य संलग्न करें।
2. रजिस्ट्रेशन फार्म प्राप्त होने पर, आपको आवास रजिस्ट्रेशन नम्बर पोस्ट/एस.एम.एस. या ई-मेल से भेजा जायेगा।
3. आवास विभाग से संबंधित सभी पूछताछ एवं सूचनाओं के लिये 0141-3106661 पर या +917297973664 पर संपर्क करें।
4. कृपया आईकार्ड हेतु प्रत्येक व्यक्ति अपना पासपोर्ट साईज फोटो साथ में संलग्नकर अवश्य भेजें।
5. शिखरजी में आईकार्ड के आधार से भोजनशाला में प्रवेश होगा, अत: आप जिस भोजनशाला में जाना चाहते हैं, उसे ही टिक करें, बाद में इसे बदला नहीं जा सकेगा।
6. रजिस्ट्रेशन हेतु आवास फार्म भरकर भेजने की अन्तिम तिथि 30 जून 2016 है; स्थान सीमित होने से आरक्षण पहले आओ पहले पाओ के आधार से ही होगा; **अत: शीघ्रातिशीघ्र आवास फार्म भरकर अपना आरक्षण सुनिश्चित करायें।**
7. आप इस फार्म की फोटोकॉपी कराकर अन्य को भी दे सकते हैं।

फार्म भरकर भेजने की अन्तिम तिथि 30 जून

कार्यालय प्रयोग हेतु :-

रजिस्ट्रेशन नं. **आवास अलॉटमेन्ट**

राशि एवं रसीद नं.

विवरण हेतु पीछे देखें

आवास आरक्षण हेतु नियम

शिखरजी में अनेक प्रकार की आवास व्यवस्थायें हैं। हमने उन सबको समायोजित करने का प्रयत्न किया है। ठहरने हेतु एक कमरे में कम से कम 4 लोगों की व्यवस्था है जो अधिकतम 6 या 8 लोगों तक की हो सकती है। कमरों की क्वालिटी भी अनेक तरह की है, जिसे हमने निम्न श्रेणियों में बाँटा है; अत: हमारा आपसे आग्रह है कि आप जितनी विस्तृत जानकारी फार्म में भरकर हमें भेजेंगे आपकी उतनी अच्छी व्यवस्था करने में हमें सुविधा होगी। आवास फार्म नि:शुल्क/सशुल्क दोनों श्रेणी की व्यवस्था वालों को भरना आवश्यक है।

नि:शुल्क आवास

जो भी भाई इन्द्र-इन्द्राणी के रूप में विधान में बैठ रहे हैं, उन्हें उनकी श्रेणी के अनुसार 4 लोग आराम से ठहर सकें, ऐसा अटैच कमरा आवास हेतु नि:शुल्क उपलब्ध कराया जायेगा।

सशुल्क आवास

जो भाई इन्द्र-इन्द्राणी के रूप में विधान में नहीं बैठ रहे हैं, उनके लिये आवास की सशुल्क व्यवस्था है, जिसकी राशि निम्न प्रकार है -

(1) डोरमेट्री (एक पलंग)	**100/- प्रतिदिन**
(2) सामान्य कमरा (कॉमन लेटबाथ)	**200/- प्रतिदिन**
(3) सेमी-डीलक्स कमरा (अटैच लेटबाथ)	**300/- प्रतिदिन**
(4) डीलक्स कमरा (अटैच लेटबाथ-पलंग सहित)	**500/- प्रतिदिन**
(5) ए.सी. डीलक्स कमरा	**800/- प्रतिदिन**
(6) ए.सी. सुईट	**1200/- प्रतिदिन**

कृपया ध्यान दें -

आवास के रजिस्ट्रेशन हेतु प्रति व्यक्ति 250/- रुपये की राशि निश्चित की गई है। जो महानुभाव बिना रजिस्ट्रेशन के सीधे शिखरजी पधारेंगे, वहाँ उन्हें किसी भी प्रकार की व्यवस्था देना हमें संभव नहीं होगा। अत: शीघ्रातिशीघ्र रजिस्ट्रेशन अवश्य करावें।

(1) इन्द्र-इन्द्राणी के लिये आवास रजिस्ट्रेशन शुल्क नहीं है। उनके आवास की बुकिंग हेतु वे जिस श्रेणी के इन्द्र हैं उसकी कम से कम 50% राशि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के पंजाब नेशनल बैंक, बापूनगर ब्रांच के खाता संख्या 0247000100024619, IFS Code: PUNB0024700 में जमा कराकर बैंक स्लिप की कॉपी या 'पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट' के नाम से A/C Payee at per चैक, ड्राफ्ट आवास फार्म के साथ संलग्न कर भेजें।

(2) जो लोग इन्द्र-इन्द्राणी नहीं बन रहे हैं; परन्तु शिविरार्थी के रूप में शिखरजी आ रहे हैं, यदि वे अंतिम तिथि से पहले आवास शुल्क पूरा भेज देते हैं तो उनके लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क फ्री है। वे सशुल्क आवास हेतु जिस श्रेणी का आवास चाहते हैं, उस राशि को उपरोक्त अकाउन्ट में भेजकर उसकी स्लिप फार्म के साथ संलग्न कर भेजें। रजिस्ट्रेशन शुल्क लेना हमारा उद्देश्य नहीं है; अपितु हमारा उद्देश्य आपकी आवास व्यवस्था को सुविधाजनक एवं आरामदायक बनाना है।

(3) इन्द्र-इन्द्राणी एवं जिनके आवास की राशि समय पर प्राप्त हो जाती है, उन्हें 10 सितम्बर तक उनके घर के पते पर रजिस्ट्रेशन किट भेजा जायेगा, जिसमें आई कार्ड, आवास अलॉटमेन्ट लेटर व अन्य सामग्री भेज दी जायेगी, जिससे शिखरजी में किसी तरह की असुविधा न हो और प्रतीक्षा न करनी पड़े।

(4) यह फार्म भरकर आप हमारी ई-मेल आई. डी. ptstjaipur@yahoo.com पर भी भेज सकते हैं।

(5) रजिस्ट्रेशन हेतु आवास फार्म भरकर भेजने की अन्तिम तिथि 30 जून 2016 है; स्थान सीमित होने से आरक्षण पहले आओ पहले पाओ के आधार से ही होगा; **अत: शीघ्रातिशीघ्र आवास फार्म भरकर अपना आरक्षण सुनिश्चित करायें।**

नोट :- 1. शिखरजी के लिये ट्रेन के रिजर्वेशन 7 जून से खुल जावेंगे; अत: आप टिकिट कराने हेतु इस डेट को अभी से अपने कैलेण्डर में नोट कर लें, ताकि अंतिम समय में असुविधा से बचा जा सके।

2. यह फार्म आप हमारी वेबसाइट **www.ptst.in** या **www.mumukshu.org** पर **online** भर सकते हैं अथवा हमें **ptst50years@gmail.com** पर ई-मेल करके या 7297973664 पर वॉट्सएप करके मंगा सकते हैं।

संपर्क पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन नं. 0141-2705581, 2707458
Mob.: 7297973664 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com; ptst50years@gmail.com

(पृष्ठ 1 का शेष...)

शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर व पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने ली।

प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर ने एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा ली गई।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित नंदकिशोरजी शास्त्री काटोल, पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित संजयजी राउत औरंगाबाद, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित राजेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ, पण्डित धमेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ, पण्डित राजेश सेठ मुम्बई, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित मनीषजी कहान जयपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री नागपुर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा, पण्डित उदयजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित साकेतजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनेश सेठ जयपुर, पण्डित गौरवजी शास्त्री जयपुर, पण्डित निखिलजी शास्त्री भायंदर, श्रीमती कमला भारिल्ल जयपुर, श्रीमती रंजना बंसल अमलाई, श्रीमती लता जैन देवलाली, श्रीमती लतारोम अकोला, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, श्रीमती मोना भारिल्ल मुम्बई, श्रीमती अध्यात्मप्रभा जैन मुम्बई, श्रीमती आशा पाटील जयपुर, कु. प्रज्ञा जैन देवलाली, श्रीमती परिणति शास्त्री विदिशा, श्रीमती शुभांगी जैन काटोल, कु. प्रतीति पाटील जयपुर आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रात:कालीन प्रौढकक्षायें – पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, ब्र. कैलाशचंदजी अचल ललितपुर आदि विद्वानों द्वारा ली गई।

प्रौढ़ कक्षायें – प्रात:काल पांच समवाय की कक्षा ब्र.सुमतप्रकाशजी द्वारा एवं दोपहर में नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पूर्व गुणस्थान विवेचन की कक्षा पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा ने ली।

बालवर्ग हेतु प्रतिदिन तीनों समय अनेक कक्षाओं का आयोजन किया गया। इन कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों द्वारा किया गया, जिसमें सैंकड़ों बच्चे सम्मिलित हुये।

इसप्रकार 50वाँ शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

(युवा फैडरेशन अधिवेशन, स्नातक सम्मेलन, स्वर्ण जयंती समारोह, आध्यात्मिक संगोष्ठियाँ, संकल्प दिवस समारोह, प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन, दीक्षांत समारोह एवं समापन समारोह के समाचार अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।)

स्वर्ण जयंती यात्रा का आयोजन

श्री टोडरमल स्मारक भवन के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर जैन सेविंग ग्रुप के तत्त्वावधान में दो दिवसीय धार्मिक यात्रा का आयोजन किया गया।

इसके अन्तर्गत लाडनूं, सुजानगढ, रैवासा, लुनवा, मौजमाबाद, नरैना आदि अतिशय क्षेत्रों की यात्रा की गई। यात्रा में अनेक धार्मिक प्रतियोगितायें, प्रवचन, गोष्ठी की गई। साथ ही भूगर्भ से निकले हुये प्राचीन जैन मन्दिर में संगीतमय पंचमेरु विधान का आयोजन स्थानीय समाज की उपस्थिति में किया गया। इस यात्रा में अनेक शास्त्री परिवार सम्मिलित हुये।

– राजेश कुमार जैन, शाहगढ

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

38वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 31 जुलाई से मंगलवार 09 अगस्त, 2016 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

संपर्क सूत्र – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141–2705581, 2707458

(पृष्ठ 3 का शेष...)

पी रहे हैं फिर भी.....।''

दूसरे छात्र ने उसको रोकते हुये कहा –''अभी पहले डॉक्टर साहब के प्रश्नों का उत्तर देना चाहिये। यह बात जो तुम कह रहे हो, प्रथम परिचय में कहने की नहीं है। मित्र ! जरा सभ्यता सीखो।''

उस छात्र की ओर से क्षमा मांगते हुये इस छात्र ने पुन: कहा –''डॉक्टर साहब अभक्ष्यपना केवल अपने स्वास्थ्य के हानि–लाभ से ही सम्बन्ध नहीं रखते। वरन् इनका सम्बन्ध अपने आत्मा की क्रूरता और पर जीवों के घात से भी है, अत: इस सम्बन्ध में इन अभक्ष्यों का पांच भागों में वर्गीकरण किया गया है – (1) त्रसघात (2) बहुघात (3) नशाकारक (4) अनिष्ट और (5) अनुपसेव्य।

(क्रमश:)

(पृष्ठ 4 का शेष...)

इसप्रकार योग के निमित्त से कर्मों का आगमन होता है, इसलिये योग आस्रव है। उसके द्वारा ग्रहण किये परमाणुओं का नाम प्रदेश है, उसका बंध हुआ और उनमें मूल व उत्तर प्रकृतियों का विभाग हुआ; इसलिये योगों द्वारा प्रदेश बंध तथा प्रकृति बंध का होना जानना।

प्रश्न : कषाय किसे कहते हैं ?

उत्तर : मोह के उदय से होने वाले मिथ्यात्व, क्रोधादिक भाव का नाम सामान्यत: कषाय है।

प्रश्न : स्थिति और अनुभाग बंध किस निमित्त से होता है ?

उत्तर : कषाय से स्थिति और अनुभाग बंध होता है।

मनुष्य, देव, तिर्यंच आयु को छोड़कर सर्व घाति-अघाति प्रकृतियों का अल्प कषाय होने पर अल्प और बहुत कषाय होने पर बहुत स्थिति बंध होता है। मनुष्य, देव, तिर्यंच आयु में इससे विपरीत अर्थात् अल्प कषाय होने पर अधिक और अधिक कषाय होने पर कम स्थिति का बंध होता है।

कषाय द्वारा ही उन कर्म प्रकृतियों में अनुभाग शक्ति होती है। वहाँ जैसा अनुभाग बंधा हो उदयकाल में उन प्रकृतियों का वैसा ही थोड़ा या बहुत फल उत्पन्न होता है।

घातिकर्मों की सर्वप्रकृतियों तथा अघातिकर्मों की पाप प्रकृतियों में तो अल्प कषाय होने पर अल्प अनुभाग बंधता है और बहुत कषाय होने पर बहुत अनुभाग बंधता है। तथा पुण्य प्रकृतियों में अल्प कषाय से बहुत अनुभाग तथा बहुत कषाय से अल्प अनुभाग बंधता है।

प्रश्न : प्रकृति, प्रदेश, स्थिति और अनुभाग बंध में विशेष कौन है ?

उत्तर : जिसप्रकार थोड़ी मदिरा हो; परन्तु उसमें बहुत कालपर्यन्त बहुत उन्मत्तता उत्पन्न करने की शक्ति हो तो वह मदिरा अधिकपने को प्राप्त हाती है और अधिक मदिरा हो परन्तु उसमें अल्प काल पर्यन्त अल्प उन्मत्तता उत्पन्न करने की शक्ति हो तो वह मदिरा हीनपने को प्राप्त होती है। उसी प्रकार बहुत कर्मपरमाणु थोड़े काल पर्यन्त थोड़ा फल देने की शक्ति सहित हो तो वे हीनपने को प्राप्त होते हैं और अल्प परमाणु हो परन्तु उनमें अधिक काल पर्यन्त बहुत फल देने की सामर्थ्य हो तो वो अधिकपने को प्राप्त है।

इसलिये योग द्वारा हुये प्रकृति, प्रदेश बंध बलवान नहीं है, अपितु कषायों द्वारा किया गया स्थिति, अनुभाग बंध ही बलवान है। इसलिये मुख्य रूप से कषाय को ही बंध का कारण जानना। जिन्हें बंध नहीं करना हो, वे कषाय नहीं करें। **- पीयूष जैन, संयोजक**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

परीक्षा परिणाम घोषित

पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के उपाध्याय वरिष्ठ (12वीं) कक्षा का परीक्षा परिणाम घोषित हुआ, जिसमें कुल 25 छात्रों में से 24 छात्र प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुये हैं।

कॉलेज में प्रथम तीन स्थान प्राप्त विद्यार्थी जिला मेरिट में भी द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ स्थान पर रहे हैं - द्वितीय स्थान प्रतीक जैन विदिशा (87.36%), तृतीय स्थान अनुभव जैन खनियांधाना (87%) एवं चतुर्थ स्थान श्रुति जैन जयपुर (84%) ने प्राप्त किया।

ज्ञातव्य है कि प्रतीक जैन ब्र.सुमतप्रकाशजी का भतीजा एवं श्रुति जैन टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. दीपकजी जैन वैद्य की सुपुत्री है।

विधान सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ आदर्शनगर स्थित मुलतान दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 15 मई को श्री मनोहरजी जैन परिवार की ओर से पवैयाजी द्वारा रचित वृहद् शांतिविधान का आयोजन किया गया। मुख्य विधानकर्त्ता श्री दिनेशजी संघवी थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन में पण्डित गोमटेशजी शास्त्री व पण्डित पंकजजी शास्त्री ने संपन्न कराये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

15 जून से 15 जुलाई	**विदेश यात्रा**	**धर्मप्रचारार्थ**
31 जुलाई से 9 अगस्त	**जयपुर**	**महाविद्यालय शिविर**
29 अगस्त से 5 सित.	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
6 से 15 सितम्बर	**औरंगाबाद**	**दशलक्षण पर्व**
9 से 14 अक्टूबर	**सम्मेदशिखरजी**	**स्वर्ण जयंती समारोह एवं समयसार विधान**

प्रकाशन तिथि : 28 मई 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127